

# New Year Puja

Date : 1st January 1991  
Place : Kalwe  
Type : Puja  
Speech : Hindi & English  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 05
English	06 - 06
Marathi	-

### II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

आज हम लोग बम्बई के पास ही में ये पूजा करने वाले हैं। बम्बई का वास्तविक नाम मुम्बई था। इसमें तीन शब्द आते हैं-मु-अम्बा और 'आई'। मराठी भाषा में माँ को 'आई' ही कहते हैं। वेदों में भी आदिशक्ति को 'ई' कहा गया है। अतः आदिशक्ति का प्रतिबिम्ब ही 'आई' है। तो मुम्बई का पहला अक्षर 'म' माँ शब्द से आया है, और अम्बा को आप जानते हैं की वो साक्षात कुण्डलिनी हैं। सो ये त्रिगुणात्मिका-तीन शब्द -हैं। बम्बई में, जैसा कि आप जानते हैं, महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली तीनों का एक सुन्दर मन्दिर है जहाँ पर ये तीन देवियाँ पृथ्वी से निकलती हैं। यद्यपि लोग यहाँ पर बहुत से अनुचित तरीकों का उपयोग करते हैं फिर भी ये तीनों देवियाँ यहाँ जागृत हैं। अतः बम्बई वालों को विशेष रूप से समझना चाहिए कि ऐसी तीनों ही मूर्तियाँ और कहीं नहीं पाई जातीं। वैसे तो आप जानते ही होंगे कि माहुरगढ़ में महासरस्वती है, तुलजापुर में भवानी (महाकाली) हैं, और कोल्हापुर में महालक्ष्मी और वणी में अर्धमात्रा जो है उसे हम आदिशक्ति कहते हैं। लेकिन बम्बई में तीनों ही मूर्तियाँ जागृत हैं। यहाँ सबसे ज्यादा मेहनत होती है और चैतन्य सबसे ज्यादा कार्य करता है। इसका कारण कभी-कभी यह भी होता है कि ऐसी जगहों में कुछ न कुछ त्रुटियाँ होती हैं जिन्हें नष्ट करने के लिए ऐसी मूर्तियाँ वहाँ प्रकट होती हैं।

उदाहरणतया और देशों में जोरास्टर ने पाँच बार जन्म लिया और उसके बाद अनेक आदि गुरुओं ने वहाँ जन्म लिया-अब्राहम, मोज़ज़ और अन्त में मोहम्मद साहिब ने भी वहाँ जन्म लिया क्योंकि वहाँ बहुत जरूरत थी इसलिए ये जन्म हुए और वहाँ ये कार्य हुआ। परन्तु बम्बई शहर के बारे में ये कहा जाता है कि शुरू से ही यहाँ लोग बहुत ही ज्यादा भौतिकवादी रहे होंगे। ऐसा किस्सा है कि एक बार पुण्डरीकाक्ष पुण्डरीक अपने माँ बाप को कावड़ में बिठा करके तीर्थ यात्रा को जाते हुए बम्बई आ गये। माता पिता दोनों बूढ़े थे। यहाँ पहुँच कर पुण्डरीक ने सोचा, मुम्बई अच्छी नगरी है, यहाँ दो मिनट आराम किया जाये। जब वे यहाँ रुके तो-भौतिकता के प्रभाव से उनकी चैतन्य लहरियाँ खराब हो गई। उनके मन में ये विचार आया कि माँ बाप को उठा कर मैं कहाँ जा रहा हूँ? ऐसा करने से मेरा क्या लाभ होगा? क्योंकि भौतिकवादी लोग हर कार्य में भौतिक लाभ खोजते हैं। पुण्डरीक ने सोचा मेरी तो पीठ दुखने लग गई है इनको मैं कहाँ ले जाऊँ? उसने अपने माता-पिता से कहा कि आप इच्छानुसार अपनी व्यवस्था कर लें। मैं आपको और आगे नहीं ले जा सकता। माँ-बाप सोचने लगे कि क्या बात है। उन्होंने देखा कि चैतन्य कुछ गड़बड़ है तो कहने लगे अच्छा ठीक है हम चले जाएंगे तुम केवल मुम्बई के दर्शन करवाते हुए हमें बाहर तक ले चलो। पुण्डरीक इसके लिए राजी हो गये। बाहर तक पहुँचते-पहुँचते उनको विचार आ रहा था कि ये कैसा झंझट मेरे पीछे लग गया है। मेरी तो कमर और बदन सब टूटने लगे हैं। परन्तु जैसे ही वे मुम्बई से बाहर पहुँचे तो उनको ठीक लगने लगा। तो शायद वे कलवा ही आये होंगे क्योंकि कलवा बम्बई से बाहर है नसीब से। जब वो बाहर आये तो उनमें इतनी शक्ति आ गई कि उनकी समझ में नहीं आई। एकदम उनका चित्त बदल गया। अपने माँ-बाप से उन्होंने माफी माँगी और प्रार्थना की कि मुझे क्षमा कर दीजिए। मैंने यह पुण्य कर्म करना है। मैं आपको आगे

की तीर्थ यात्रा पर ले जाता हूँ।

आप जानते हैं कि यहाँ पर दो सरोवर हैं। एक पम्पा सरोवर के नाम से जाना जाता है और दूसरे का वर्णन भी रामायण में किया गया है। इसका मतलब यह है कि दण्डकारण्य में घूमें और वहाँ बहुत सारे चैतन्य का प्रादुर्भाव किया। इसके अलावा भी महाराष्ट्र में बहुत कार्य किया गया। अनेक संत यहाँ पैदा हुए। संतों को बहुत सताया भी गया तो भी बार-बार संत यहाँ आते गये और संत की वजह से एक बड़ा कार्य हुआ कि लोगों में धर्म के प्रति अध्यात्म के प्रति रुचि हो गई। फिर भी यहाँ कोई न कोई गड़बड़ बात रही होगी। क्योंकि यहाँ अष्टविनायक हैं, साढ़े तीन पीठ हैं और इसके अलावा तीन देवियों का प्रादुर्भाव खासकर बम्बई में हुआ। इसका मतलब यह है कि यहाँ कोई न कोई बड़ा भारी दोष रहा होगा। जिसके कारण यहाँ इतनी मेहनत करनी पड़ी। और मेरा भी जन्म महाराष्ट्र में हो गया। तो ये सोचना जरूरी है कि क्या बात है कि हममें त्रुटि रह गई। बम्बई के लोग बहुत ही भौतिकवादी हैं। यहाँ अंग्रेज आये और उन्होंने अंग्रेजियत सिखाई जिससे आदमी भौतिकवादी हो गया और उसका सारा चित्त बाह्य में आ गया। समुद्र के रास्ते से फिर पुर्तगाल तथा अन्य देशों से लोग यहाँ पर आए परिणामवश यहाँ के भौतिकवादी लोग और अधिक भौतिकवादी बन गये। यही कारण है कि सहजयोग में आने के बाद भी बम्बई के लोग भौतिकता से चिपके रहते हैं और उनमें दूसरे जगह के लोगों की अपेक्षा बहुत कम उड़ान होती है। बड़े आश्चर्य की बात है कि महाराष्ट्र में इतनी मेहनत करने पर भी हम इतना कार्य नहीं कर पाये जितना हमने उत्तरी भारत में किया। उत्तरी भारत के लोग जितना बढ़ पाये उतने यहाँ के लोग नहीं बढ़ सके। इसका कारण यही है कि हम लोगों में अब भी एक बड़ी तरह की जड़ता है। धर्म के मामले में भी जड़ता है। अब भी यहाँ इतने गुरु-घंटाल हं जितने उत्तरी भारत में नहीं हैं क्योंकि वहाँ वे चल ही नहीं पायेंगे और यहाँ के भौतिक लोगों को ऐसे ही गुरु घंटाल अच्छे लगते हैं जो तांत्रिक हैं और जो उनकी ऐसी चीज़ों में मदद करें जिनसे दूसरों का नुकसान हो जाए। यहाँ झूठे गुरु भी बहुत हैं वो भी सब भौतिक लोगों को पकड़े हुए हैं और उनको समझा देते हैं कि कोई नहीं आपको सीधे परमात्मा का नाम याद करना चाहिए। पर उनके हित की कोई आन्तरिक इच्छा उनके हृदय में नहीं। वे चाहे कुगुरु न भी हों उनके मन में लोगों को कुछ देने की इच्छा नहीं है। चौथी चीज़ जो मैं देखती हूँ और जिससे मुझे आश्चर्य होता है कि ब्राह्मण लोग अति भौतिकवादी हो गये हैं। किसी जमाने में जाति पाति के विरुद्ध तथा विधवा विवाह के पक्ष में आगरकर साहब आदि ने कितना कार्य किया। मराठी लेखकों, ब्राह्मणों, कवियों तथा संतों ने यहाँ बहुत मेहनत की। राम दास स्वामी, ऋषियन सरस्वती तथा ब्राह्मण लोगों ने भी बहुत मेहनत करके अध्यात्म को स्थापित किया। तासगणों ने कहा 'आम्हासी महाणती ब्राह्मण आम्ही जावि ले नाही ब्रह्म आम्ही कसले ब्राह्मण।' इस तरह से उन्होंने हमारे अन्दर यह जागृति की कि जब तुम ब्रह्म को नहीं जानते तो तुम ब्राह्मण नहीं हो। और हर तरह से कोशिश की कि जाति पाति हट जाए। परन्तु आधुनिक काल में मैं देखती हूँ कि ब्राह्मण लोग बहुत अधिक आधुनिक हो गये हैं। जैसे किसी औरत के बाल कटे दिखाई दे और चश्मा लगाया हो और सिगरेट पी रही हो तो पूछने पर पता चलेगा कि वह ब्राह्मण है। तो लोगों में इस तरह का परिवर्तन मेरी समझ में नहीं आता।

यहाँ दूसरी कौम जिसे मराठा कहते हैं उनकी तलवार क्योंकि अब महत्वहीन हो गई है अब वे आपस में ही गर्दन काट रहे हैं। क्योंकि अब तलवार का करें तो क्या करें? ये सोचते हैं कि पहले तलवार लिये शिवाजी महाराज

के लिए लड़ते थे, अब आपस में भाऊ-बन्दकी कर रहे हैं और एक दूसरे की गर्दन काट रहे हैं।

तीसरे वैश्य जाति तो यहाँ है ही नहीं क्योंकि इन लोगों को व्यापार करना नहीं आता। मुंह फट होने की वजह से ये व्यापार कर नहीं सकते। रही आध्यात्म की बात, तो किसके साहारे बधा जाये। ये मुझे समझ में नहीं आता कि किसे कहें कि तुम आध्यात्म को पकड़ो। जाति-पाति को हटाना या गलत धारणाओं को हटाना तो दूर उसमें और घुसे चले जा रहे हैं। आज इतना ज्यादा इसका प्रकोप हो गया है कि कोई समझ भी नहीं सकता कि जाति-पाति सब व्यर्थ की चीज़ है और इससे सिर्फ अनर्थ होने वाला है।

इस तरह से हमारे महाराष्ट्र में अनेक चीज़ें चल पड़ी है। उनकी तरफ हमें ध्यान देना चाहिए। हालांकि यहाँ के लोग सीधे हैं, भोले भी हैं और पैसे का विचार इनको बहुत ही छोटे तरीके का है, बड़े तरीके का नहीं है। पर इनकी नितान्त श्रद्धा गणेश जी पर है। ये बहुत बड़ी बात है कि चारित्रिकता में ये लोग समाये हुए हैं। उनका चारित्रिक-विवेक हमारी बहुत बड़ी सम्पदा है। यद्यपि चारित्रिक विवेक द्वारा ही सहज कार्य तेजी से हो सकता है फिर भी मनुष्य में गहनता के बिना सहजयोग आगे नहीं बढ़ सकता। यहाँ लोग पार तो बहुत हो जाते हैं परन्तु जमते नहीं क्योंकि उन्होंने अपनी गहनता को छुआ नहीं। आज यह पूजा करते हुए हमें सोचना है कि महाराष्ट्र की त्रुटियों की ओर ध्यान देते हुए हमें सहजयोग का कार्य करना है। त्रुटियाँ हर जगह हैं कोई भी मनुष्य आज तक परिपूर्ण नहीं हुआ। विदेशी शासकों के प्रभाव से भी त्रुटियाँ आईं। त्रुटियों का ध्यान रखते हुए यदि आप कार्य करें तो सहजयोग बहुत जोरों से फैल सकता है। यहाँ संतों ने बहुत कार्य किया है जिसके फलस्वरूप हम लोगों का कार्य आज खड़ा हो सकता है। तो इस मुम्बई के आशीर्वाद से आज आप बैठे हुए हैं और भी जो तीन शक्तियाँ है उनका भी आशीर्वाद आप लोगों को मिल रहा है। इस आशीर्वाद के सहारे यहाँ सहजयोग बहुत जल्दी बढ़ना चाहिए। परन्तु देखा जाता है कि सहजयोग में होते हुए भी लोग इस कार्य में सहयोग नहीं देते और एक तरह से अपनी जान बचाकर रहते हैं। यदि आप अपनी जान बचायेंगे तो भगवान भी अपनी जान बचायेंगे। जितना आप सहजयोग के लिए कार्यान्वित रहेंगे उतना ही आपको आशीर्वाद मिलता है क्योंकि मैं आपको पहले भी बता चुकी हूँ कि अब कृत-युग शुरू हो गया है, पहले कलियुग था। कलियुग में किसी तरह चल जाता था लेकिन अब कृतयुग में कोई भी गलत काम यदि आप करेंगे तो उसका फल फौरन आपको मिल जाएगा। पुण्य कार्य भी यदि आप करेंगे तो उसका लाभ भी आपको फौरन मिल जाएगा। इस प्रकार की परिस्थिति, हम कहेंगे, वातावरण में है। तो गलत काम करने वाले आदमी को बहुत सोच समझकर रहना चाहिए क्योंकि बुरा या भला जैसा भी आप करेंगे उसका असर फौरन आप पर आ जाएगा। यह आज की स्थिति है। अब हम लोगों को सोचना चाहिए कि अगर हम बम्बई में रह रहे हैं तो हम बहुत कुछ कार्य कर सकते हैं। मैंने बम्बई में बहुत मेहनत की जिसके फलस्वरूप आज आप इतने लोग यहाँ पर आये हैं। लेकिन अब आप सबको यह सोचना है कि हमें सहजयोग के लिए क्यों करना है। रोज रात को बैठकर आप यह सोचे कि सहजयोग के लिए हमने क्या कार्य किया, हम तो सिर्फ अपने लिये ही कर रहे हैं, अतः जो जान बचायेंगे वो आकर हमें न कहें कि 'माँ हमें ये रोग हो गया, हमें यह तकलीफ हो गई, हमें यह परेशा हो गई।' होनी ही है क्योंकि आप अगर अपनी जान बचाइयेगा तो परमात्मा का ध्यान भी आपकी ओर नहीं रहेगा। परम-चैतन्य

का ध्यान अपनी ओर रखने के लिए आप हर समय सोचे कि आज हमने कौन सा पुण्य कर्म किया? आज हमने सहयोग के लिए कौन सा काम किया? पूरे मन से हमने सहजयोग के लिए क्या किया? यह सब करने से ही आपको पूरी तरह से आशीर्वाद मिल सकता है और आप जान सकते हैं कि सहजयोग में आप आशीर्वादित लोग हैं और परमात्मा के साम्राज्य में बैठे हैं। पर जैसे किसी भी साम्राज्य में गलत काम करने पर आपाके कोई न कोई शिक्षा, कोई न कोई दण्ड दिया जाता है उसी प्रकार इस साम्राज्य में भी होता है। लेकिन इसमें थोड़ा समय दे दिया जाता है। अच्छा देखते हैं ठीक हो जाए-ठीक हो जाए। पर इसका इशारा आपको फौरन मिल जायेगा कि आपने गलत काम किया तो, आपकी चैतन्य लहरियाँ (वाइब्रेशन्स) छूट जाएंगी। इसलिए बहुत सम्भल कर चलना है आगे को। धीरे-धीरे आगे बढ़ना है और आपको बहुत उंचाई पर जाना है। आप जानते हैं कि सारे देश के लिए तो यह जरूरी है ही, सारी दुनिया के लिए भी जरूरी है कि हमारे महाराष्ट्र में सहजयोग बहुत पनप जाए और उसकी सम्पदा हम सारी दुनियाँ को दे दें। इसलिए बार-बार कहना है कि आज सब लोग मन में प्रतिज्ञा करें (क्योंकि नया साल आया हुआ है।) कि आज से हम अपने को सहजयोग में पूरी तरह ढाल देंगे, उसके लिए पूरी धारणा करेंगे और स्वयं को उन्नत करेंगे और सहजयोग को हम सम्भालेंगे। यह सभी के लिए है न कि सिर्फ महाराष्ट्र के लिए। सारी दुनियाँ के लोगों से यह बात मैं कह रही हूँ।

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## ENGLISH TALK

I am sorry I had to talk in Hindi because most of them are Hindi-knowing people and I've just told them what is the importance of Bombay, and why so many incarnations came here, and why Shri Rama had to walk in the villages and the hills and dales of Maharashtra, what was the need, and the need is that they should all develop their Sahaja Yoga. Also, this would be the last Pujja for all of you, in India. I hope you all have gained a lot in these different Pujas and different places we have been to.

Only thing is that one should remember that kritayuga has started. Now kaliyuga is over, kritayuga has started, and in this yuga - that the paramachaitanya is absolutely effective and very efficient. Now if you do anything wrong it will punish you. It may not punish immediately but it will give you a suggestion, it will give you a proper signal that something is going wrong with you. But if you do not try to control your footsteps then you may go down very fast. So you have to be very careful about that. Actually, I have told you so many times that there are two forces working, one which attracts you inside and one which throws you out. So, it is important for all of us to remember that this kritayuga is there, and in that this paramachaitanya is overactive.

Also, you are rewarded. You have been telling me so many stories how sahaj it worked out, how sahaj it has happened, all of you have been telling Me very nice stories. But it is part of your play in Sahaja Yoga and that is your place in the kingdom of God. So, in the kingdom of God you are there, try to enjoy it, that's the only thing you have to do is to enjoy the kingdom of God. But if you try to, sort of, dislocate yourself from this joy, break the connection of joy by some sort of thinking, which is not reality, then you are responsible for yourself. So, I have to tell you that keep the connection on. Not only that, but try to make it stronger and stronger, and become one with that divine force permanently, which will flow through you and will not only enlighten you but will give you so many powers, and you will see the new life in this new year.

Yesterday, as I requested you, we have to work it out now. Individually, we have to go all out to see that we spread Sahaja Yoga and talk about it. On this day I give you complete freedom to do what you like to spread Sahaja Yoga. You need not ask Me any permissions, and you can try everything that you want to. But should be something decent, should not be something indecent and something which is not behaving a Sahaja Yogi. Even if you have to write letters or answers or anything, even if you have to show the anger it should be done in a very decent and a beautiful manner. And it should show that it's a yogi who is talking.

The other things, whatever problems you have, will be solved in no time. But the main problem is yourself, it should be solved by you by meditative methods. And so much attention we are paying to all our extra-curricular activities but that will definitely fail, it will boomerang on you if you do not have the foundation of Sahaja Yoga. It is very important to keep attention on your spirit all the time so that whatever you are doing, whatever you are projecting, has the base and you just don't get lost. This is a very important thing, and I am sure that you will understand that without the nourishment from the roots you cannot grow. So this nourishment must be kept [ALIVE or ALIGHT?].

May God bless you! Thank you very much.